

डॉ. मार्क जेनिंग्स, मार्क, व्याख्यान 7, मरकुस 3:20-35, परिवार और शत्रु

© 2024 मार्क जेनिंग्स और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. मार्क जेनिंग्स द्वारा मार्क के सुसमाचार पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 7 है, मार्क 3:20-35, परिवार और शत्रु।

तो, हम वापस आ गए हैं और अभी भी मार्क अध्याय 3 पर काम कर रहे हैं। हमने अभी-अभी सब्त के दिन चंगाई और मार्क 7 से 12 के सारांश कथनों और फिर 12 के चयन को देखना समाप्त किया है।

अब हम मार्क के एक भाग, मार्क 3 20 से 35 पर आते हैं, जो कि अत्यंत मार्कियन है। इससे मेरा मतलब है कि आप मार्ग की संरचना में भी मार्क के हाथ की भारी उपस्थिति देख सकते हैं। मार्क के सुसमाचार में हम जो चीजें देखते हैं उनमें से एक यह है कि मार्क चुनाव कर रहा है।

हमने अपनी चर्चा की शुरुआत में ही इस बारे में बात की थी, लेकिन मार्क सिर्फ वही सब कुछ नहीं दोहरा रहा है जो वह जानता है, बल्कि वह चुनाव कर रहा है। प्राचीन इतिहासलेखन में किसी संदेश या विषय या विषय को व्यक्त करने में मदद करने के लिए घटनाओं को व्यवस्थित करना आम बात थी। आप किसी घटना को पूरी तरह से नहीं बना सकते, आप कल्पना नहीं लिख सकते, लेकिन आप कुछ संदेश देने के लिए घटनाओं के क्रम में फेरबदल कर सकते हैं।

और हम मार्क 3:20 से 35 में एक बहुत अच्छा उदाहरण देखते हैं। वास्तव में, हम जो देखते हैं उसे अक्सर मार्कियन सैंडविच के रूप में संदर्भित किया जाता है। मार्कियन सैंडविच का विचार, या यदि आप आधिकारिक शब्द चाहते हैं तो इंटरकैलेशन, लेकिन मार्कियन सैंडविच का विचार यह है कि मार्क एक खाता शुरू करता है, एक कहानी शुरू करता है, रोटी का एक टुकड़ा, और उस कहानी को बताने में, वह एक दूसरी कहानी डालता है।

हम इसे मांस कहेंगे। वह दूसरी कहानी पूरी तरह सुनाता है, और फिर वह पहली कहानी पर लौटता है और उसे खत्म करता है। इसलिए, वह रोटी के टुकड़े की ओर मुड़ता है।

और इसीलिए इसे सैंडविच कहा जाता है क्योंकि आपके पास एक कहानी है जो दूसरी कहानी को ब्रेकेट करती है। और इसका एक स्पष्ट उदाहरण यहाँ मार्क 3:20 से 35 में है। इसलिए, उदाहरण के लिए, अगर मैं श्लोक 20 से शुरू करता हूँ, तो यीशु एक घर में दाखिल हुए और फिर से इतनी भीड़ जमा हो गई कि वह और उनके शिष्य खाना भी नहीं खा पाए।

जब उसके परिवार को इस बारे में पता चला, तो वे उसे संभालने के लिए चले गए क्योंकि उन्होंने कहा कि वह पागल हो गया है। अब अगर मैं श्लोक 31 तक नीचे जाता हूँ, तो वहाँ यीशु की माँ और भाई बाहर खड़े थे। उन्होंने उसे बुलाने के लिए किसी को अंदर भेजा।

उसके चारों ओर भीड़ बैठी थी और उन्होंने उससे कहा कि तुम्हारी माँ और भाई बाहर तुम्हें ढूँढ़ रहे हैं। मेरी माँ और भाई कौन हैं? उसने पूछा। फिर उसने अपने चारों ओर घेरा बनाकर बैठे लोगों की ओर देखा और कहा, ये हैं मेरी माँ और मेरे भाई।

जो कोई भी परमेश्वर की इच्छा पूरी करता है, वह मेरी माँ है, मेरा भाई है, मेरी बहन है, और मेरी माँ है। अब यह एक कहानी है। इस घर में यीशु की इस स्थिति का विवरण, वहाँ जाने वाला परिवार, वहाँ परिवार को देखने वाले लोग, यीशु को अपने परिवारों के बारे में बताते हुए जो बाहर उसे ढूँढ़ रहे थे और उसका यह कथन कि वास्तव में उसका परिवार कौन है।

और हम उस सब पर वापस आएँगे। लेकिन यह एक कहानी है, फिर भी यह बीच में ही रुक जाती है। यह कहानी पद 20 से पद 30 तक इस विवरण के साथ बीच में ही रुक जाती है, यीशु और फरीसियों के बीच यह बातचीत, उसका यह आरोप कि वह बेलज़ेबूब के साथ गठबंधन में है, और इसी तरह की अन्य बातें।

इसलिए, फरीसियों के साथ यीशु की बातचीत एक पूरी तरह से अलग घटना है। ऐसा कोई संकेत नहीं है कि घर में ऐसा हो रहा था। यह एक अलग घटना है जिसे मार्क ने पारिवारिक विवरण में शामिल किया है।

तो, सवाल, ज़ाहिर है, हमेशा यही होता है कि क्यों? इस साहित्यिक उपकरण पर सामान्य विचार मार्क 5:21-43, मार्क 11 और मार्क 14 में देखा जाता है। इसलिए, हम उसे कहीं और ऐसा करते हुए देखते हैं। मार्क ऐसा क्यों करता है, इस पर आम सहमति यह है कि वह चाहता है कि ये दोनों घटनाएँ एक-दूसरे की परस्पर व्याख्या करें, अक्सर मुख्य बात, बाधा डालने वाला, मार्क द्वारा कहानी सुनाने में बाधा डालने का स्पष्ट विकल्प मजबूत दृश्य होता है, जो सबसे अधिक जानकारी देता है या जिसमें तनाव होता है।

और इसलिए, मैं चाहता हूँ कि हम इस मार्क और सैंडविच के बारे में सोचें। और हम इस पर इस तरह से विचार करेंगे कि ये दो अलग-अलग खाते, ये दो अलग-अलग पेरिकोप, मार्क में मौजूद एक इकाई के रूप में मौजूद रहें। और मुझे लगता है कि हम देखेंगे कि मांस घटक पार्श्व हिस्सों के लिए धार्मिक कुंजी है।

अब जब हम इस पर गौर करते हैं, जब हम इस अंश को देखते हैं, तो यह रोटी के पहले टुकड़े से शुरू होता है, जब यीशु एक घर में दाखिल होता है और फिर से भीड़ इकट्ठा होती है। सबसे अधिक संभावना है कि हम यहाँ जो देख रहे हैं वह संभवतः पतरस के घर की ओर इशारा करता है, फिर से यह भाषा, ऐसा लगता है कि यह वह घर है जहाँ वह बार-बार आता रहता है। यह एक ऐसी जगह रही होगी जिसके बारे में उन्हें पता होगा कि वहाँ है।

और यहाँ भीड़ है, और जैसा कि हम मार्क के सुसमाचार में देखते हैं, हम इसे अक्सर देखते हैं। भीड़ क्या करती है? वे रास्ते में आ जाते हैं। वे यहाँ क्या कर रहे हैं? वे खाने से रोक रहे हैं। यहाँ इतनी भीड़ है कि वे खाना भी नहीं खा पा रहे हैं।

जब उसके परिवार को इस बारे में पता चला, संभवतः यीशु के इस घर में होने और मौजूद होने के बारे में सुनकर, वे उसे संभालने के लिए चले गए। उसे संभालने का मतलब है कि वे उसे वह काम बंद करने के लिए मजबूर करना चाहते हैं जो वह कर रहा है। वह जो कर रहा है, उसमें कुछ ऐसा है जो परिवार के लिए शर्म की बात है।

प्राचीन दुनिया में सम्मान-अपमान की संस्कृति में, परिवार के सदस्य या तो परिवार के सदस्यों को सम्मान देते थे या उन्हें अपमानित करते थे। आप एक दूसरे को संक्रमित करते थे। और इसलिए, वे शायद इस समय जिस बात को लेकर चिंतित हैं, वह यह है कि यहाँ यीशु है, जो अब अपने बारे में बातें कह रहा है और पापों को क्षमा करने की शक्ति रखता है।

वह कहता रहा है कि वह सब्बाथ का प्रभु है। वह धार्मिक नेताओं की दुश्मनी को भड़काता रहा है। हमने सूखे हाथ से इस बारे में बात की, लेकिन उन आरोपों के बारे में भी जो वह उन पर लगा रहा है।

वह घोषणा कर रहे हैं कि लोगों को उनके सामने उपवास नहीं करना चाहिए। इसलिए, वह अपने आस-पास उपवास करने की प्रथा को प्रतिबंधित कर रहे हैं। वह ऐसी सभी चीजें कर रहे हैं जो उनके परिवार को परेशान करेंगी।

फिलहाल, उसके परिवार पर आरोप लगाया जा रहा है। क्या आप उस व्यक्ति के परिवार से नहीं हैं जो ये सब कर रहा है और साथ ही ये बातें भी कह रहा है? और वे चाहते हैं कि वह ऐसा करना बंद कर दे, और वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि वह पागल हो गया है। वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि यीशु के ऐसा करने का कारण यह है कि वह अब अपनी मानसिक क्षमताओं को नियंत्रित नहीं कर पा रहा है। वह पागल है।

यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि वे क्या सोचते हैं कि धार्मिक नेता क्या कह रहे हैं। वे देखते हैं कि यीशु क्या कर रहा है और उन्हें लगता है कि यह गलत है, ऐसा नहीं होना चाहिए, वह पागल हो गया है। धार्मिक नेता कुछ बहुत अलग कहने जा रहे हैं।

और यहीं पर, जब वह अपने होश खो बैठा है, मार्क कहानी को बीच में ही रोक देता है। 22. और व्यवस्था के शिक्षक जो यरूशलेम से आये थे, और यह बात महत्वपूर्ण है, कि वे यरूशलेम से आये थे।

अब आप हमेशा यरूशलेम से ही आते हैं। आप जहाँ भी जा रहे हैं, आप यरूशलेम से ही आते हैं। एक, यह यरूशलेम के धार्मिक महत्व का विचार है, लेकिन भौगोलिक दृष्टि से भी यह ऊंचा था, यह अधिक ऊंचा था।

लेकिन हमेशा एक व्यक्ति यरूशलेम से आता था। लेकिन यह महत्वपूर्ण है कि कानून के ये शिक्षक सिर्फ स्थानीय लोग नहीं हैं। वे सत्ता की सीट से आते हैं।

यरूशलेम धार्मिक शक्ति का केन्द्र था, परमेश्वर का महान नगर था, और वे ही लोग हैं जो नीचे आये हैं।

और वे आरोप लगाने के लिए नीचे आ रहे हैं। वे नीचे आते हैं और सवाल पूछते हैं, या वे बयान देते हैं, कि वह बेलज़ेबूब, राक्षसों के राजकुमार द्वारा ग्रसित है, वह राक्षसों को बाहर निकाल रहा है। यहाँ ध्यान दें कि यहाँ कोई विशेष भूत भगाने की बात नहीं है।

वे किसी विशेष घटना के बारे में बात नहीं कर रहे हैं। वे दुष्टात्माओं पर उसकी शक्ति के बारे में बात कर रहे हैं। जब वे अद्भुत अधिकार पर विचार करते हैं, और हमने अध्याय 1 से 3 में दुष्टात्माओं पर यीशु के अधिकार के प्रमाण देखे हैं, सारांश कथन कि जब भी वह प्रकट होता था, दुष्टात्माएँ नीचे गिर जाती थीं और वह उन्हें चुप रहने के लिए कहता था।

हमने इसे कफ़रनहूम में देखा और फिर यह उल्लेख किया कि उसने बहुत से दुष्टात्माओं को निकाला। और इसलिए आपको यह दृश्य मिला है जहाँ यीशु दुष्टात्माओं पर इतना अद्भुत अधिकार दिखा रहा है। और सिर्फ़ एक या दो दुष्टात्माएँ नहीं, बल्कि यहाँ बहुत से दुष्टात्माएँ घटित हो रही हैं।

और यरूशलेम के धार्मिक नेताओं को इसकी भनक लग गई है, और अब वे यह घोषणा कर रहे हैं कि वह ऐसा क्यों कर सकता है। और वे यीशु के खिलाफ़ दो आरोप लगाते हैं। वे दो स्पष्टीकरण देते हैं।

पहले वाले पर ध्यान दें, वह बेलज़ेबूब, शायद बेलज़ेबुल के कब्जे में है। स्पष्ट नहीं है, वास्तव में यह भी निश्चित नहीं है कि यह विचार कैसा है। मक्खियों का स्वामी, घर का स्वामी।

यह स्पष्ट है कि वे इसे राक्षसों के राजकुमार, शैतान के रूप में समझते हैं। और फिर यीशु ने जिस तरह से जवाब दिया, उससे पता चलता है कि वे इसे शैतान के रूप में समझ रहे हैं। और जब आप दो के बारे में सोचते हैं, तो बील संदर्भ दिलचस्प हैं, उदाहरण के लिए, सिर्फ़ दूसरा राजा 1।

लेकिन पहला आरोप यह है कि वह भूत-प्रेत से ग्रसित है। लेकिन फिर दूसरा, वहाँ एक दूसरा आरोप है। और वह राक्षसों के राजकुमार द्वारा है, वह राक्षसों को बाहर निकाल रहा है।

और जिस तरह से यह आरोप पढ़ा जा रहा है वह अब यह नहीं है कि वह केवल इसके द्वारा ग्रसित है, बल्कि यह लगभग राक्षसों के शासक के साथ काम करने का विचार है। इसका अर्थ यह है कि वे कह रहे हैं कि यीशु के पास भूत है। अब, भूत-प्रेत की भाषा के बारे में सोचें।

हमने देखा है कि भूत-प्रेत से ग्रसित लोग ऐसी बातें कह रहे हैं जो वे कह नहीं सकते। वे ऐसी चीजें कर रहे हैं, आप जानते हैं। राक्षस उनके माध्यम से ऐसी चीजें कर रहे हैं। यही हमने देखा।

जब दुष्टात्माएँ बोलती थीं, तो यह उस व्यक्ति की क्षमता नहीं थी जो उस व्यक्ति के पास थी। यह उस व्यक्ति के माध्यम से बोलने वाला दुष्टात्मा था। लेकिन इस भाषा के साथ चलते हुए कि वह इस शक्ति से ग्रस्त है, वह यह कर रहा है, यह यह चाल बनाता है, यह केवल कहने का नहीं, बल्कि यह परिवर्तन करता है कि यीशु ऐसा क्यों कर सकता है, इसका कारण यह है कि बेलज़ेबुल उसके अंदर है।

और वह वास्तव में अपने काम को नियंत्रित करने में असमर्थ है। यह वास्तव में भागीदारी की भाषा में बदल जाता है। कि किसी तरह वह इसमें भाग ले रहा है।

और यह एक बढ़ा हुआ आरोप है। यह एक दिलचस्प तनाव है, है न? परिवार ने सोचा कि वह पागल है, और शायद पागल शब्द का संबंध भूत-प्रेत से हो सकता है। लेकिन जिस शक्ति से वह यह सब कर रहा है, उस भाषा का अर्थ यह है कि उसके पास वह अधिकार है, उसके पास वह शक्ति है, न कि केवल उसके माध्यम से काम करने वाली शक्ति।

तो फिर आरोप यह है कि यीशु कोई निर्दोष पीड़ित नहीं है जिसे खुद राक्षसों को निकालने की ज़रूरत है, बल्कि वह जानबूझकर इसमें भाग ले रहा है। मुझे लगता है कि यह भी यीशु द्वारा दिए गए जवाब की व्याख्या करता है। तो यहाँ उनका स्पष्टीकरण है।

यीशु के पास दुष्टात्माओं पर इतना अधिकार क्यों है, इसका उनका स्पष्टीकरण यह है कि वह बेलज़ेबुल का सदस्य है और उसके साथ काम कर रहा है। इसलिए, यीशु ने उन्हें बुलाया और दृष्टांतों में उनसे बात की। दिलचस्प बात यह है कि मार्क 4 के अलावा, जब यीशु मार्क के सुसमाचार में दृष्टांतों में बोलते हैं, तो यह आमतौर पर बहस करने और फटकार लगाने के अंदाज में होता है।

मार्क 4 में थोड़ा अलग है। उनके तर्क का सार, जिसके बारे में हम आगे बात करेंगे, यह है कि धार्मिक नेता जो स्पष्टीकरण दे रहे हैं वह बेतुका है। यही वह प्रारंभिक प्रतिक्रिया है जो यीशु देते हैं।

यह कहना बेतुका है कि शैतान दुष्टात्माओं को निकालने के लिए यीशु के साथ और उसके माध्यम से काम कर रहा है। यह एक हास्यास्पद सुझाव है। तो, वह पूछता है, शैतान शैतान को कैसे निकाल सकता है? और फिर वह दो दृष्टांत देता है।

अगर कोई राज्य अपने ही खिलाफ़ बंटा हुआ है, तो वह राज्य टिक नहीं सकता। अगर कोई घर अपने ही खिलाफ़ बंटा हुआ है, तो वह घर टिक नहीं सकता। इन दो दृष्टांतों पर यह दिलचस्प है।

इस पर कुछ बहस है: क्या यह एक बड़ा छोटा मामला है, या यह एक ही बात कहने का एक तरीका है? दूसरे शब्दों में, क्या यीशु यह कह रहे हैं कि अगर एक राज्य, एक व्यापक राजनीतिक इकाई, अपने आप में विभाजित हो जाती है, तो इसका मतलब है कि वह राज्य खत्म हो गया है? वह राज्य विभाजित हो जाएगा। यह टिक नहीं पाएगा।

अगर आपके घर में भी ऐसा ही है तो यह बात आपके घर के लिए भी सच है। तो, यह संभव है कि यह एक प्रमुख-मामूली सिद्धांत है, जो राज्यों के लिए सत्य है, और यह घर के लिए भी सत्य है। या यह एक ही बात कह रहा है? इसका मतलब है एक घर, जैसे कि एक राजवंश का घर या एक शासक का घर, और वह एक ही बात कह रहा है।

मुझे लगता है कि यह एक बड़ा-छोटा तर्क है, लेकिन एक दिलचस्प शब्द है, घर, जिसका इस्तेमाल शासक घर का वर्णन करने के लिए भी किया जा सकता है। और इसलिए हमारे पास यह दृष्टांत है, ये दो दृष्टांत दृष्टांत हैं, जो मूल रूप से कहते हैं कि यह एक जल्द ही ज्ञात वास्तविकता है, कि एक राज्य जो खुद के खिलाफ विभाजित है, उसका परिणाम इसके मोहभंग के अंत में होगा। यह शैतान के लिए एक भयानक रणनीति होगी जिसका उपयोग वह अपने उद्देश्यों को आगे बढ़ाने के लिए कर रहा है ताकि खुद को विभाजित और हमला कर सके।

यह एक अतार्किक कारण है। और फिर श्लोक 26 में, यदि शैतान खुद का विरोध करता है, जिसका अर्थ है कि यदि आप जो कहते हैं वह सच है और विभाजित है, तो यह कहने का एक बहुत ही अनूठा तरीका है, ठीक है, चलो कुछ ऐसा मान लेते हैं जो सच है जिसे हम सभी जानते हैं कि वह सच नहीं है। यह तर्क का प्रकार है।

हम जानते हैं कि यह सच नहीं है, लेकिन मान लीजिए कि यह सच था। अगर शैतान खुद का विरोध करता है और विभाजित है, तो वह टिक नहीं सकता। उसका अंत आ गया है। अगर आप जो कह रहे थे, दूसरे शब्दों में, अगर यीशु शैतान के राज्य के विस्तार के खिलाफ जा रहा है, शैतान की योजना के अनुसार, तो वास्तव में इसका मतलब है कि शैतान का शासन खत्म हो गया है।

मेरा मतलब है, इसमें थोड़ी विडंबना है। अगर यह सच था, तो शैतान वास्तव में सक्रिय रूप से अपने लक्ष्य की ओर बढ़ रहा था। और इसलिए, वह फिर से यह बात सामने रखता है, और कहता है, मुझे यकीन है कि आप इससे सहमत नहीं होंगे।

मुझे यकीन है कि आप ऐसा नहीं सोचते कि शैतान ऐसा करने की कोशिश कर रहा है। इसलिए, वह धार्मिक नेताओं से कहता है, मेरे खिलाफ आपके आरोप, उसकी पहली प्रतिक्रिया उनके तर्क के तर्क को चुनौती देना है कि उनका तर्क मूर्खतापूर्ण है।

यह दिलचस्प है क्योंकि यहाँ एक रेखा खींची गई है। आराधनालय में वापस याद करें, जब वह कहता है, जब वह पूछता है, आप जानते हैं, सब्त के दिन क्या करना वैध है? अच्छा करना या बुरा करना, किसी की जान बचाना या मारना। और धार्मिक नेता चुप रहते हैं। वे किसी भी तरह से यीशु के तर्क की पुष्टि नहीं करना चाहते थे।

और यहाँ हम इस बात को और बढ़ा देते हैं कि वे एक बेतुके तर्क को भी आगे बढ़ाने के लिए तैयार हैं। अगर उनकी चुप्पी दिलों की कठोरता का सबूत थी, तो इसीलिए यीशु क्रोधित थे। यह तर्क, यह आरोप, उनकी कठोरता का कितना अधिक सबूत है? वास्तव में, जब यीशु इसे आगे बढ़ाते हैं और इसे जारी रखते हैं, तो हम यही देखने जा रहे हैं। और इसलिए, वे सबसे पहले इसकी अतार्किकता को इंगित करके शुरू करते हैं।

लेकिन यीशु यहीं नहीं रुकते। फिर वे कारण बताते हैं, क्षमा करें, भूत-प्रेत भगाने का कारण। मेरा मतलब है, सवाल अभी भी है, यीशु ऐसा कैसे कर पाते हैं? उन्होंने एक बेतुका सुझाव दिया है, फिर यीशु 27 के साथ समझाते हैं।

दरअसल, कोई भी व्यक्ति किसी ताकतवर व्यक्ति के घर में घुसकर उसका सामान नहीं लूट सकता, जब तक कि वह पहले उस ताकतवर व्यक्ति को बांध न दे। उसके बाद वह उसके घर को लूट सकता है। यही उसका स्पष्टीकरण है।

वह जो हो रहा है उसके लिए एक स्पष्टीकरण देता है। अब, इस सादृश्य में बलवान व्यक्ति को समझें, जो हो रहा है उसका चित्र, क्योंकि सवाल यह है कि कोई व्यक्ति इतने सारे भूत-प्रेत कैसे निकाल सकता है? कोई व्यक्ति इतने सारे राक्षसों को इतने पूर्ण रूप से और इतने पूर्ण रूप से किसी से कैसे निकाल सकता है? खैर, यीशु जो स्पष्टीकरण दे रहे हैं वह एक बलवान व्यक्ति का चित्र है। और कोई भी व्यक्ति बलवान व्यक्ति के घर में प्रवेश नहीं कर सकता और उस बलवान व्यक्ति से सामान नहीं छीन सकता जब तक कि वह पहले उसे बाँध न ले, जब तक कि वह वास्तव में उससे अधिक शक्तिशाली न हो।

तो, इस सादृश्य में, या इस चित्र में जो यीशु प्रस्तुत कर रहे हैं, वह शक्तिशाली व्यक्ति शैतान है। उसके पास यह घर है, ये लोग हैं। उसके पास सारी संपत्ति है।

उनका उन पर पूरा नियंत्रण है। और कोई भी व्यक्ति बलवान व्यक्ति से कुछ नहीं छीन सकता जब तक कि वह वास्तव में बलवान व्यक्ति से अधिक बलवान न हो और उसे वश में करके बाँध न सके। तो, इस चित्र में, जो कि एक बलवान व्यक्ति की लूट है, जो चित्र चित्रित किया जा रहा है वह यह है कि यीशु कह रहे हैं, मैं बलवान व्यक्ति के घर में जा रहा हूँ, और मैं उसे बाँध रहा हूँ, और मैं उसे रोक रहा हूँ, और फिर मैं जो चाहता हूँ उसे ले रहा हूँ।

इस तरह से यह सादृश्य काम करता है। और इसलिए, और यह सही है, यह यीशु कौन है, इस बारे में हमारी पहली प्रस्तुति के साथ फिट बैठता है। यीशु कौन है, इसकी पहली प्रस्तुति यह है कि यीशु अधिक शक्तिशाली है।

जॉन बैपटिस्ट ने उसे इसी रूप में वर्णित किया है। वह मुझसे अधिक शक्तिशाली है। तो, तर्क यह है कि यीशु का भूत भगाना दिखाता है कि उसने शैतान को वश में कर लिया है।

तो, शैतान के पास वास्तव में अपनी शक्ति है, और उसका शासन वास्तव में समाप्त हो गया है। लेकिन धार्मिक नेताओं के सुझाव के कारण नहीं, कि शैतान का राज्य गिर रहा है क्योंकि वह अपने ही विरुद्ध विभाजित है। यीशु जो कह रहे हैं, नहीं, राज्य गिर रहा है, शैतान का राज्य रुक रहा है क्योंकि यीशु बस अधिक शक्तिशाली है।

वह शैतान से ज़्यादा शक्तिशाली है। यशायाह 49:24 से 26 में, मुझे लगता है कि यह भी इसी तरह की बात है। आप जानते हैं, आपके मन में भी यह विचार है कि यीशु ने बंदियों को आज़ाद किया।

जो लोग बंदी हैं, वे बंदी हैं, और वह उन्हें मुक्त करता है। आप जानते हैं, यशायाह का अंश, क्या कोई शक्तिशाली से लूट लेगा? और अगर कोई अन्यायपूर्वक बंदी बना ले, तो क्या वह बच जाएगा? इस प्रकार प्रभु कहते हैं, अगर कोई शक्तिशाली को बंदी बना ले, तो वह लूट लेगा, और मजबूत से लूट लेने से वह बच जाएगा। और मैं तुम्हारा न्याय करूँगा, और मैं तुम्हारे बेटों को बचाऊँगा।

और जो लोग पीड़ित हैं, तुम उन्हें, जो लोग तुम्हें पीड़ित करते हैं, वे अपना मांस खाएँगे, और वे अपना खून पीएँगे जैसे कि नया दाखमधु पीया जाता है। तब सब प्राणी समझ जाएँगे कि मैं ही वह यहोवा हूँ जिसने तुम्हें बचाया, जो याकूब की शक्ति में सहायक है। मुझे लगता है कि यशायाह 49 का यह अंश इसमें एक बड़ी भूमिका निभाता है।

जहाँ यीशु उस व्यक्ति से लूटपाट करने का अभिनय कर रहे हैं जिसने दूसरों को बंदी बना लिया है। कि यीशु ही वह व्यक्ति है जिसके पास याकूब की शक्ति है। और सभी को पता चल जाएगा कि प्रभु ने तुम्हें बचाया है।

हम मार्क के भूत भगाने के काम में इसे देखते हैं। हम देखते हैं कि इस पूरी कहानी में यीशु की प्रसिद्धि को दर्शाया गया है कि वह सभी दुष्टात्माओं को बाहर निकालने में सक्षम है। वास्तव में, हम देखेंगे कि यीशु खुद भी ऐसे कथन कहेंगे जो बहुत हद तक इस बात से मिलते-जुलते हैं कि प्रभु ही वह है जिसने तुम्हें बचाया है।

तो, यहाँ आपको एक संकेत मिल गया है। तो, यशायाह में, वह परमेश्वर है जो बचाव कर रहा है। यहाँ यह यीशु है जो यह कर रहा है।

तो, यीशु परमेश्वर का कार्य कर रहे हैं जो यशायाह में प्रस्तुत किया गया है। और फिर दुष्टात्माओं को भगाना इस बात का एक प्रमुख उदाहरण बन जाता है कि परमेश्वर का राज्य आ गया है। कि परमेश्वर की सर्वोच्च शक्ति यीशु में आ गई है।

तो, मुझे लगता है कि यह दिलचस्प है। अब, यह बाध्यकारी भाषा, शायद यहाँ एक छोटा सा बिंदु है, जहाँ यह कहता है कि जब तक वह बाँधता नहीं है। मुझे लगता है कि यह किसी तरह की अनुष्ठानिक घोषणा नहीं है।

यह विचार कि मैं तुम्हें बाँधता हूँ। मुझे लगता है कि यह वास्तव में ताकत को समझाने वाला एक दृष्टांत मात्र है। और जब हम दृष्टांतात्मक दृष्टांत देखते हैं तो हमें हमेशा सावधान रहना चाहिए।

ऐसी चीज़ें जो एक तस्वीर को व्यक्त करती हैं। फिर हम उस तस्वीर को शाब्दिक रूप देते हैं। और हम इसे एक तरह की रस्म बना देते हैं।

वास्तव में, यहूदी साहित्य में शैतानी शक्तियों को बांधने के अधिकांश संदर्भ वास्तव में अक्सर युगांतिक निर्णय को संदर्भित करते हैं। उदाहरण के लिए, शैतान को एक हज़ार साल के लिए बांध दिया जाता है। और इसलिए, जब हम बांधने वाली भाषा देखते हैं, तो वह भाषा अक्सर जीत और अधिकार से जुड़ी होती है, न कि विधि से।

हालाँकि, संदर्भ बदल जाता है। उदाहरण के लिए, कुछ जगहों पर आप इस खाते के बदलने या खत्म होने की उम्मीद कर सकते हैं।

आप उम्मीद कर सकते थे कि यह सिर्फ उनके तर्क की मूर्खता को दिखाने के साथ ही समाप्त हो जाएगा। लेकिन यह यहीं समाप्त नहीं हुआ। यह यीशु द्वारा अगले चरण में जाकर यह समझाने के साथ समाप्त हुआ कि इन राक्षसों का उपयोग कैसे किया जा रहा है।

लेकिन यह यहीं खत्म नहीं होता। इसके बाद यीशु बातचीत में आगे बढ़ते हुए अपना आरोप और निर्णय सुनाते हैं। इसलिए, इसकी शुरुआत धार्मिक नेताओं द्वारा यीशु पर बेलज़ेबुल के साथ सांठगांठ करने का आरोप लगाने से होती है।

यह यीशु द्वारा उन पर आरोप लगाने के साथ समाप्त होता है। इसमें न्याय की भाषा है, बहुत ही कठोर न्याय की भाषा। श्लोक 28, मैं तुमसे सच कहता हूँ।

वैसे, यह परिचय देने का एक आम तरीका है, खास तौर पर सुसमाचार में, यीशु कहते हैं, यहाँ एक फैसला आता है। मैं तुमसे सच कहता हूँ। मनुष्यों के सभी पाप और निन्दा उन्हें क्षमा कर दी जाएगी।

लेकिन जो कोई पवित्र आत्मा के खिलाफ निन्दा करता है, उसे कभी माफ़ नहीं किया जाएगा। वह एक अनन्त पाप का दोषी है। उसने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि वे कह रहे थे कि उसमें दुष्ट आत्मा है।

यह बात महत्वपूर्ण नहीं है। तो, आप जानते हैं, वह इस तरह का तर्क देता है जहाँ वह एक को छोड़कर सभी तर्कों पर चलता है। यह द्वितीय मंदिर यहूदी धर्म में बहस करने का एक बहुत ही सामान्य तरीका है, जहाँ इस को छोड़कर सभी।

और इसलिए, वह सभी पापों और ईशनिन्दाओं को क्षमा कर देगा। और सवाल यह है कि, निश्चित रूप से, वह किस हद तक ईशनिन्दा का मतलब रखता है? वहाँ क्या हो रहा है? इन सभी चीजों को क्षमा कर दिया जाएगा, उनके पाप और ईशनिन्दा, चाहे वे किसी भी तरह की ईशनिन्दा क्यों न करें। क्षमा का यह भविष्य का विचार है।

और इसलिए, उच्च पापों के विशेष रूप से ईशनिन्दा बहुत कठिन है क्योंकि इस समय अवधि में ईशनिन्दा का इस्तेमाल कई तरह से किया जा सकता है। इसमें उच्च आरोप हो सकता है, लेकिन यह कम आरोप भी हो सकता है। संभवतः ईशनिन्दा का यह विचार निंदात्मक रूप से बोलना हो सकता है, शायद दूसरों के बारे में निंदात्मक रूप से बोलना हो, या शायद ईश्वर के बारे में निंदात्मक रूप से बोलना हो।

यह विचार हो सकता है। संरचना स्पष्ट रूप से ईशनिन्दा पर केंद्रित है। और इसलिए यीशु ने क्षमा की संभावना के बारे में यह कथन दिया।

तो, एक बात के लिए, वह सभी पापों और सभी ईशनिन्दाओं के बारे में यह सुंदर बयान देता है, जैसे कि क्षमा की सीमा जो उपलब्ध होगी। लेकिन यह मुख्य बात नहीं है। मुख्य बात यह है कि जो निर्णय लिया जा रहा है, उसे उजागर करना है।

इसलिए, वह यह मंच तैयार करता है और कहता है कि पापों और ईशनिंदाओं की महान छतरी के बावजूद, उन्हें क्षमा कर दिया जाएगा। मेरा मतलब है, और यह वह जगह नहीं है जहाँ आप कहते हैं, आह, तो सार्वभौमिक क्षमा है। नहीं, यह तर्क का तर्क नहीं है।

तर्क कोई तरीका, विधि या प्रक्रिया नहीं है। तर्क गुणवत्ता है। पापों का महान गुण क्षमा के लिए उपलब्ध है।

क्षमा उन सभी को उपलब्ध है, सिवाय एक के। लेकिन जो कोई पवित्र आत्मा के विरुद्ध ईशनिंदा करता है, उसे कभी क्षमा नहीं किया जाएगा। वह एक अनन्त पाप का दोषी है।

वह ऐसा इसलिए कहता है क्योंकि वे कह रहे हैं कि उसमें दुष्ट आत्मा है। अब यह संदर्भ, उसने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि उन्होंने कहा कि उसमें दुष्ट आत्मा है। यह इस अंश का एक बहुत ही महत्वपूर्ण हिस्सा है, क्योंकि यह संदर्भ यह समझा रहा है कि पवित्र आत्मा की निन्दा से यीशु का क्या मतलब है।

पवित्र आत्मा की निन्दा क्या है, इस पर चर्चा की कोई कमी नहीं है। मुझे याद है, जब मैं छोटा बच्चा था, तब मैं ऐसे घर में बड़ा हुआ था जहाँ चर्च जाता था और बाइबल पढ़ता था; मुझे इस तरह की परवरिश पाकर बहुत खुशी हुई। मुझे याद है कि इसे पढ़ते हुए मैं बहुत घबरा गया था, बहुत घबरा गया था।

क्या मैंने ऐसा किया था? आप जानते हैं, यह अक्षम्य है। मैं लगभग नौ साल का था, और मैं वहाँ बैठा हूँ, हमारे पास एक बहुत बड़ा धार्मिक संकट है, और निश्चित रूप से, जिस किसी को भी यह धार्मिक संकट हुआ है, आमतौर पर आपको किसी से यह वाक्य सुनने को मिलता है, ठीक है, अगर आपको आश्चर्य है कि क्या आपने ऐसा किया है, तो आपने ऐसा नहीं किया है। यह यहाँ सांत्वना की आवाज़ थी।

लेकिन देखिए क्या हो रहा है। यह बहुत ही स्पष्ट है। वह सबसे पहले उनके खिलाफ यह आरोप जारी कर रहे हैं।

धार्मिक नेताओं ने पवित्र आत्मा की निन्दा की है। उसने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि वे कह रहे थे कि उसमें दुष्ट आत्मा है। इसलिए, सबसे पहले, उसने कहा, हम वापस इस पर आएं कि यहाँ पवित्र आत्मा की निन्दा क्या है, लेकिन उसने पहले कहा है, तुमने जो अभी किया है उसे माफ़ नहीं किया जाएगा।

अब आप ऐसी स्थिति में हैं जहाँ क्षमा नहीं मिलेगी। अब, यह कठोरता के तुरंत बाद आ रहा है, है न? और यह है, पूरे पुराने नियम में, कठोरता की यह तस्वीर है जो फिर ठोस हो जाती है। यह हृदय की कठोरता है।

फिरौन का हृदय कठोर हो गया है। उसमें कठोरता है, और फिर परमेश्वर ने उसका हृदय कठोर कर दिया। और वास्तव में, फिरौन के हृदय का कठोर होना परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करता है कि वह प्रकट करे कि वह कौन है।

और मुझे लगता है कि यहाँ भी यही हो रहा है, कि हमें यह घोषणा मिल गई है कि यीशु ने पहले ही कहा है कि वह उनके हृदय की कठोरता पर क्रोधित था। हमने आराधनालय में पहले की घटना देखी। और यहाँ, स्पष्ट प्रमाण है कि वे अब पूरी तरह से अस्वीकृति की स्थिति में हैं, कि उनका हृदय कठोर हो गया है, और वे यीशु द्वारा किए जा रहे कार्यों को देखना पसंद करेंगे।

और यीशु जो कर रहे हैं वह परमेश्वर की शक्ति का स्पष्ट प्रमाण है। क्या परमेश्वर की शक्ति शैतान की शक्ति के विरुद्ध काम कर रही है और जीत रही है? यह एक ऐसी गतिविधि थी जिसे परमेश्वर की संप्रभुता के रूप में पुष्टि की जानी चाहिए थी, कि परमेश्वर को महिमा दी जाएगी, और कि यीशु परमेश्वर का कार्य करने की घोषणा करेंगे। वे बल्कि यह कहेंगे कि यीशु के माध्यम से परमेश्वर की शक्ति के विशाल प्रदर्शन के पूर्ण प्रमाण में, और वे बल्कि यह कहेंगे कि शैतानी ताकतों को हराया जा रहा है और लोगों को बहाल किया जा रहा है।

क्योंकि याद रखें, हम यहाँ लोगों के बारे में बात कर रहे हैं, न कि केवल सामान्य आध्यात्मिक साक्ष्य के बारे में। हम लोगों के जीवन को पुनःस्थापित करने के बारे में बात कर रहे हैं। जब हम राक्षसी सेना में पहुँचेंगे तो हम इसे बहुत स्पष्ट रूप से देखेंगे।

वे यह कहना ज़्यादा पसंद करेंगे कि यह शैतान का काम है, बजाय इसके कि यीशु को परमेश्वर का काम करने वाला बताया जाए। यही यीशु की परिभाषा है, पवित्र आत्मा की निन्दा। इस संदर्भ में पवित्र आत्मा की निन्दा यह कहना है कि मैं यीशु को वह करते हुए देखता हूँ जो स्पष्ट रूप से परमेश्वर का काम है।

यह पुष्टि करने के बजाय कि ईश्वर यीशु में काम कर रहा है, मैं पुष्टि करूँगा और कहूँगा कि यीशु शैतान के साथ गठबंधन में है। ध्यान दें कि यह पवित्र आत्मा की निन्दा की एक बहुत ही सख्त परिचालन परिभाषा है। और इसलिए, जैसा कि हम, जैसा कि हम, जो भी हम पवित्र आत्मा की निन्दा कहते हैं, जो भी आवेदन हम करना चाहते हैं, जो भी सुझाव हमारे पास है कि यह अभी भी कैसे हो रहा है या नहीं हो रहा है, इसे उस मानक पर फिट होना चाहिए।

इसे यीशु में काम कर रहे ईश्वर की शक्ति के स्पष्ट, भारी, विशाल सबूत कहने के मानक पर खरा उतरना चाहिए और यह कहना चाहिए कि यीशु वास्तव में ऐसा इसलिए कर रहे हैं क्योंकि वह शैतान के साथ गठबंधन में हैं। यह एक बहुत ही सख्त परिभाषा है। अगर हम कभी उस परिभाषा से बाहर कदम रखते हैं तो मैं बहुत सावधान रहने वाला हूँ।

लेकिन यहाँ भी वापस आते हुए, उन्होंने कहा है कि उनके कथन ने उन्हें पूर्ण न्याय के अधीन कर दिया है, कि परमेश्वर का न्याय अब सुनाया जा चुका है। यह उस न्याय की भाषा से अलग नहीं है जो परमेश्वर ने पुराने नियम में राष्ट्रों के विरुद्ध कही थी जब वह न्याय की घोषणा करता है जो होने वाला है और घोषणा करता है कि समय आ गया है। और हम इस पीढ़ी, इस शासक पीढ़ी के विरुद्ध इस न्याय की भाषा को और भी अधिक स्पष्ट होते हुए देखेंगे, खासकर जब हम अंदर जाते हैं, जैसे यीशु यरूशलेम में प्रवेश करते हैं।

तो यहाँ हमारे पास यीशु द्वारा इस शत्रुता पर निर्णय सुनाने की अविश्वसनीय रूप से शक्तिशाली कहानी है। लेकिन याद रखें, यह कहानी एक बाधा है। मत भूलिए कि हमने यीशु के बारे में यह कहानी घर से शुरू की थी, और वहाँ बहुत सारे लोग थे, और वे खाना नहीं खा पा रहे थे, और उसके परिवार को लगा कि वह पागल हो गया है, और वे उसे लेने आ रहे थे।

और फिर हम इस छोटी सी कहानी को इस बड़े, विशाल संघर्ष में छोड़ देते हैं। हमें घर में यीशु की कहानी पर वापस आना होगा। तो, श्लोक 31 में, यीशु की माँ और भाई आते हैं, बाहर खड़े होते हैं।

उन्होंने किसी को बुलाकर उसे बुलाया, और उसके चारों ओर भीड़ लगी हुई थी। उन्होंने उससे कहा, “तेरी माँ और भाई बाहर तुझे ढूँढ़ रहे हैं।” उसने पूछा, “मेरी माँ और भाई कौन हैं?”

और फिर उसने अपने चारों ओर घेरा बनाकर बैठे लोगों की ओर देखा और कहा, ये मेरी माँ और मेरे भाई हैं। जो कोई भी परमेश्वर की इच्छा पूरी करता है, वह मेरा भाई, बहन और माँ है। इसलिए, यह जानना दिलचस्प है कि हम इस प्रक्रिया में कैसे खेलते हैं। क्या हो रहा है? खैर, मुझे लगता है कि यह पूरा सवाल एक सवाल ही रहा है।

हमारे पास 12 लोगों का बुलावा है। हमारे पास यह आंदोलन है कि कौन लोग यीशु के हैं, कौन अंदरूनी लोग हैं, अगर मैं उस शब्द का इस्तेमाल कर सकता हूँ, और कौन बाहरी लोग हैं। एक समूह स्पष्ट रूप से बाहरी है और उसने पूर्ण शत्रुता घोषित की है और इसके कारण उसे न्याय मिला है।

ये धार्मिक नेता थे। तो, यहाँ एक और तस्वीर है, हालाँकि, एक परिवार के सदस्य की। ये परिवार के सदस्य देखते हैं कि यीशु क्या कर रहा है और क्या कह रहा है, और उन्हें लगता है कि वह पागल है।

ध्यान दें कि उन परिवार के सदस्यों के साथ क्या नहीं होता है। मैं इस बारे में एक पल के लिए सोचना चाहता हूँ, इससे पहले कि हम काल्पनिक रिश्तेदारी के विचार में आगे बढ़ें। यीशु अपनी माँ और अपने भाइयों पर पवित्र आत्मा की निंदा करने का आरोप नहीं लगाते हैं।

वहाँ आशा है। दूसरे शब्दों में, यह समूह जो सोचता है कि यीशु गलत कर रहा है, उसके खून के रिश्तेदार जो सोचते हैं कि यीशु पागल हो गया है, वे दिल की कठोरता में इतने आगे नहीं बढ़े हैं कि वे ऐसा कुछ करें जो अक्षम्य हो। वास्तव में, हम उसके परिवार के कुछ लोगों के बारे में क्या जानते हैं? हम जानते हैं कि उसका एक भाई है जिसका नाम जेम्स है।

याकूब को पुनरुत्थान का दर्शन मिलेगा। यीशु याकूब के सामने प्रकट होंगे। पौलुस हमें बताता है कि यीशु प्रेरितों के सामने और फिर याकूब के सामने प्रकट हुए।

जेम्स यरूशलेम चर्च के नेताओं में से एक बन जाएगा। यरूशलेम में ईसाई, यहूदी जो यीशु का अनुसरण कर रहे हैं, जेम्स उनके नेताओं में से एक होगा। जेम्स जेम्स लिखता है।

यहूदा भी उसका भाई था। यहूदा, जो यहूदा लिखता है, उसका भाई भी है। इसलिए, हम यीशु के अपने वंश, उसके अपने भाइयों से जानते हैं कि वे इस बात को अस्वीकार कर रहे हैं, लेकिन वे सभी उस रुख पर कायम नहीं रहेंगे।

इसलिए, मुझे लगता है कि उनके लिए थोड़ी उम्मीद भी है। लेकिन इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि जब यीशु अपने परिवार के बारे में बात कर रहे हैं, तो ध्यान रखें कि यह इस दृश्य में है जब यीशु इस्राएल की इस युगान्तिक पुनर्स्थापना के बारह लोगों को चुन रहे हैं, यह परमेश्वर के लोगों का प्रश्न है।

यीशु ने एक बहुत ही मजबूत बयान जारी किया कि जो लोग उसके परिवार हैं, और जब वह इनके बारे में बात करता है तो ये मेरी माताएँ, मेरे भाई और बहनें हैं, मुझे लगता है कि सबसे खूबसूरत बात यह है कि वह वहाँ बैठा है और लोग उसके चारों ओर बैठे हैं, और वह पुरुषों और महिलाओं को बाहर रखने की इस तस्वीर की घोषणा कर रहा है। अगर वह सिर्फ पुरुषों को शामिल कर रहा होता, तो शायद वह सिर्फ भाइयों का इस्तेमाल करता। लेकिन जब वह कहता है कि ये मेरी माँ, मेरे भाई और मेरी बहनें हैं, तो यह उन लोगों के लिए लिंग-समावेशी है जो यीशु के लोगों से संबंधित हो सकते हैं।

लेकिन ध्यान दें कि वह जो कह रहा है उसका रक्त संबंध से कोई लेना-देना नहीं है। अब, यह तब तक फैला हुआ है। आप इसे गैर-यहूदी मिशन में भी शामिल कर सकते हैं।

इसका जातीय पहचान से कोई लेना-देना नहीं है। केवल वे लोग जो ईश्वर की इच्छा पूरी कर रहे हैं। और इसलिए, यहाँ यह विचार धार्मिक नेताओं का था जो संभवतः वे लोग थे जो जानते थे और समझा सकते थे कि ईश्वर की इच्छा पूरी करने का क्या मतलब है, और वे बाहर हैं।

इस समूह को क्षमा न करने वाला घोषित किया गया है। वे भगवान की इच्छा पूरी नहीं कर रहे हैं। परिवार के सदस्य जो सोचते हैं कि वह पागल है, वे वर्तमान में भगवान की इच्छा पूरी नहीं कर रहे हैं, लेकिन अभी भी उम्मीद है।

जो लोग बैठकर यीशु को सुन रहे हैं, यीशु को सुनना, यीशु के अनुसार कार्य करना और उसकी पुष्टि करना, परमेश्वर की इच्छा को पूरा करना है। परमेश्वर की इच्छा यीशु द्वारा और यीशु में पूरी तरह से व्यक्त की गई है, और इसलिए यह बहुत शक्तिशाली कथन है कि रिश्तेदारी की भाषा सबसे मजबूत बंधन है।

अब वह इसे किसी भी वंशानुगत डिजाइन से बाहर निकाल रहा है और इसे यीशु के कहने के अनुसरण में रख रहा है। उसने पहले ही कहा है कि वह कानून और शास्त्र का अधिकारी है। इसलिए, यीशु के प्रति विभिन्न प्रतिक्रियाओं के बीच यह परस्पर क्रिया बहुत शक्तिशाली है।

एक घोषणा है कि वह दुष्ट है। एक कथन है कि वह भ्रमित है। और फिर वहाँ है, मैं सुनना चाहता हूँ, क्योंकि यीशु मुझे दे रहा है और परमेश्वर की इच्छा प्रदर्शित कर रहा है।

ये यीशु के प्रति तीन प्रतिक्रियाएँ हैं जो अभी भी गायब नहीं हुई हैं, और हम वास्तव में उन्हें मार्क के सुसमाचार के बाकी हिस्सों में देखना जारी रखेंगे। तो यह मार्क अध्याय 3 है। अब, जब हम मार्क अध्याय 4 में आगे बढ़ेंगे, जो हम अगली बार करेंगे, तो हम मार्क अध्याय 4 के साथ देखेंगे कि हम कुछ दृष्टान्तों और यीशु की कुछ शिक्षाओं में चले जाएँगे। हम उनके कार्यों के बारे में बात कर रहे थे, और अब हम उनकी कुछ शिक्षाओं में भी कदम रखेंगे।

यह डॉ. मार्क जेनिंग्स द्वारा मार्क के सुसमाचार पर दिया गया उपदेश है। यह सत्र 7, मार्क 3:20-35, परिवार और शत्रु है।